500051

No. of Printed Pages : 4

SKS-01

2014

सामान्य हिन्दी

प्रश्न पत्र–I

GENERAL HINDI

Paper-I

निर्धारित समय : 3 घण्टे | *पूर्णांक : 200*

Time Allowed : Three Hours | ***Maximum Marks : 200***

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके अंत में इंगित हैं।

(iii) उत्तर पुस्तिका के अन्दर कहीं भी अपना नाम या अनुक्रमांक न लिखें। पत्रादि के अन्त में क, ख, ग लिख सकते हैं।

(iv) एक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर अनिवार्यतः एक साथ दिया जाय।

1. निम्नलिखित में से किसी एक पर 400 शब्दों का निबंध लिखिए: 40

(क) भारत की राष्ट्रीय संस्कृति

(ख) केदारनाथ : 2013

(ग) समाज निर्माण में विज्ञान की भूमिका

(घ) धर्म और राजनीति

(ङ) वृक्षारोपणः समय की अनिवार्यता

2. बालक, जवान या बूढ़े मरें, हम इससे भयभीत क्यों हों? कोई पल ऐसा नहीं जाता जब इस जगत में कहीं किसी का जन्म और कहीं किसी की मृत्यु न होती हो। पैदा होने पर खुशियाँ मनाना और मौत से डरना बड़ी मूर्खता है, यह बात हमें सदा ही अनुभव करनी चाहिए। जो लोग आत्मवादी हैं – और हममें कौन ऐसा हिंदू , मुसलमान या पारसी होगा जो आत्मा के अस्तित्व को न मानता हो – वे जानते हैं कि आत्मा कभी मरती नहीं। यही नहीं बल्कि जीवित और मृत, समस्त प्राणी एक ही हैं, उनके गुण भी एक ही हैं। इस दशा में, जब कि जगत में उत्पत्ति और लय पल–पल पर होती ही रहती है, हम क्यों खुशियाँ मनाएँ और क्यों शोक करें। सारे देश को यदि हम अपना परिवार मानें – यदि हमारी भावना इतनी व्यापक हो – और देश में जहाँ कहीं किसी का जन्म हुआ हो – उसे हम अपने ही यहाँ हुआ मानें तो फिर आप कितने जन्मोत्सव मनाएँगे ? देश में जहाँ–जहाँ मृत्यु हो उन सबके लिए यदि हम रोते रहें तो हमारी आँखों के आँसू कभी सूखेंगे ही नहीं, यह सोचकर हमें मृत्यु का डर छोड़ ही देना चाहिए। और जो मनुष्य मुत्यु का भय छोड़ देगा उसे जेल का भय क्यों कर होगा? ज्यों–ज्यों अधिकाधिक निरपराध मनुष्य जान–बूझकर मौत को गले लगाने के लिए तैयार

होते जाएंगे त्यों–त्यों दूसरे लोगों का बचाव होता जाएगा। जो दुःख खुशी के साथ सहन किया जाता है वह दुःख नहीं रहता, बल्कि सुख हो जाता है। जो दुःख से जी चुराता है वह बहुत कष्ट उठाता है और संकट के उपस्थित होने पर निर्जीव–सा हो जाता है। जो आनंद के साथ दुःख का स्वागत करने के लिए पैर बढ़ाता है उसे वह आरंभिक दुःख, जो केवल दुःख की कल्पना से ही उत्पन्न होता है, कैसे हो सकता है? आनंद पीड़ा पर क्लोरोफार्म का काम करता है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 5

(ख) मूल गद्यांश का सारांश लिखिए। 20

(ग) उपर्युक्त गद्यांश के तीन रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए। 15

3. (1) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक का पल्लवन कीजिए। 15

(क) भारत कभी भी सही अर्थों में राष्ट्रवादी नहीं रहा।

(ख) पापी का मन सदा शंकित रहता है।

(ग) जब तक माला गूँथी जाती है, तब तक फूल मुरझा जाते हैं।

(घ) कोई भी विशिष्ट सभ्यता विशिष्ट मानव अनुभव की व्याख्या होती है।

(ङ) रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लेहैं कोय।।

(2) उत्तराखण्ड के प्रमुख सचिव (उच्च शिक्षा) की और से सभी महाविद्यालयों में सहायक प्राध्यापकों के पद हेतु नेट योग्यता की अनिवार्यता संबंधी शासनादेश का प्रारुप तैयार कीजिए। 15

अथवा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में कुलसचिव की ओर से दस वर्ष पूर्व प्रयोग में आ चुकी उत्तर पुस्तिकाओं की नीलामी संबंधी आदेश तथा तत्संबंधी निविदा का प्रारूप तैयार कीजिए।

4. (क) किन्हीं पाँच शब्दों के चार–चार पर्यायवाची लिखिए : 10

1. आदित्य
2. मेघ
3. ईमानदार
4. उजाला
5. स्त्री
6. आभूषण
7. तालाब
8. पर्याप्त

(ख) किन्हीं पाँच शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए : 5

1. अधोमुख
2. आकर्षण
3. आहत
4. विश्लेषण
5. प्रसाद
6. बंधन
7. उन्मीलन
8. एड़ी

(ग) किन्हीं पाँच शब्दों में से प्रत्येक में समास का नाम लिखिए : 5

1. राजभवन
2. गिरहकट
3. भाई–बहन
4. नीलकंठ
5. चरणकमल
6. त्रिफला
7. भुखमरा
8. पंचतत्त्व

5. (क) किन्हीं पाँच वाक्यांशों का चयन करते हुए प्रत्येक के लिए एक–एक शब्द लिखिए : 5

1. अंडे से उत्पन्न
2. आसानी से पचने वाला
3. कम बोलने वाला
4. जिसकी उपमा न हो सके
5. जिसका जन्म बाद में हुआ हो
6. मृत्यु के निकट पहुँचा हुआ
7. संकटों से घिरा हुआ
8. जो किये गए उपकारों को नहीं मानता

(ख) किन्हीं पाँच मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 15

1. अंजर–पंजर ढीले कर देना
2. चोला छोड़ना
3. दाई से पेट छिपाना
4. हाथ के तोते उड़ना
5. क्या काबुल में गधे नहीं होते?
6. नटनी बाँस चढ़ी तो घूँघट क्या?
7. काजी की लौंडी मरी, सारा शहर आया, काजी मरे कोई न आया
8. नंगा खड़ा उजाड़ में, है कोई कपड़े ले

6. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए: 25

कुरुप व्यक्ति जब तक अपना प्रतिबिम्ब दर्पण में नहीं देख लेता तब तक अपने को दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक सुंदर समझता है। जो वास्तव में रूपवान होता है, वह कभी भी अपने सौंदर्य की डींग नहीं मारता। आप एक सुअर को पुष्पों से लदे बाग में छोड़ दीजिए, पंरतु वह वहाँ भी कूड़ा–करकट ही खोजेगा। दुष्ट व्यक्ति के समक्ष सत् और असत् प्रस्तुत किए जाने पर वह असत् का ही वरण करेगा। दूध और पानी का मिश्रण हंस के सामने रखें तो वह दूध ग्रहण कर पानी त्याग देगा। बुद्धिमान व्यक्ति हंस के समान है जो सत् को स्वीकार कर असत् को नकार देता है। ईमानदार लोग दूसरों की बुराई करने में पीड़ा का अनुभव करते हैं, यहाँ तक कि उन लोगों को भी कष्ट नहीं पहुँचाते जिन्होंने उनके लिए बुरा किया है। इसलिए मैं आपसे सत्य बोलने की विनय करता हूँ। सत्य सैकड़ों अश्वमेध यज्ञों से भी श्रेष्ठ है। यह चारों वेदों के अध्ययन और तीर्थयात्रा के बराबर है। सत्य से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है, असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

7. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: 25

A king, who lived in a grand palace, was about to give a big feast. The weather was so bad that not even a single fish could be caught. But on the morning of the day of the feast, a poor fisherman came there with a fish. The king was very glad and he said, 'You yourself demand the price of the fish.' The fisherman replied, 'One hundred lashes on my bare back is its price.' The king said, 'I would have liked more to give you money, but I have to buy the fish. So I shall do what you say.' When the fisherman had received fifty lashes, cried, 'Stop, I have a partner. He should also have his share.' Being surprised the king said, 'Are there two such fool in the world? Call the other fool.' The fisherman said, 'The other fool is your own gatekeeper. He did not let me come in, till I promised that I would give him half the price, which I get for it.' When the gatekeeper had received fifty whips, he was turned out and the wise fisherman got a good prize.